शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 40908

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में प्रागैतिहासिक शैल चित्रण

डॉ० पूजा कपिल
प्रवक्ता
आई०एन०पी०जी० कॉलिज, मेरठ

सारांश

आदि मानव प्रकृति के साथ ही रहता था। जो कुछ भी उसे अपने आस–पास मिला उसी का प्रयोग उसने किया। रहने के लिये प्राकृतिक गुफायें ही उसका सुन्दरतम निवास था। बहती हुई नदियाँ ही उसके लिये पानी प्रदान करती थी। जब अपने भावों को व्यक्त करने की इच्छा उसके मन में उठी तो उसने प्रकृति प्रदत्त खनिज पदार्थ गेरु, रामराज, कोयला, तथा खड़िया आदि को ही रेखांकन और चित्रण का माध्यम बनाया। पत्थर की चट्टाने ही उसका चित्रतल था। खड़ी, पड़ी, तिरछी तथा आयताकार रेखाओं से उसने मानवकृतियाँ बनाने का प्रयास किया।

मूल शब्द

पशु चित्रण, प्रागैतिहासिक मानवाकृति, आखेट, शिला चित्र।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ० पूजा कपिल

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में प्रागैतिहासिक शैल चित्रण

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 67–72

Article No. 10
http://anubooks.com
?page_id=581

त्रिभुज, आयत, वृत्त तथा शटकोण आदि ज्यामितिक आकार भी उसने बनाये। अधिकतर चित्र रेखाओं द्वारा ही बनाये हैं। कहीं–कहीं क्षेपांकन पद्धति का प्रयोग भी मिलता है। कहीं–कहीं ऐसी आकृति के पत्थर मिले हैं जिनसे ज्ञात हाता है कि उनका प्रयोग सिल की तरह पीसने के लिये किया गया था।

चित्रों में अधिकतर लाल, पीला, काला व सफेद रंग ही प्रयुक्त हुआ है। रंगों को पशुओं की चर्बी में मिलाकर लगाया गया है। भीम बैठका की गुफाओं में प्रागैतिहासिक कला चरम परिणति पर पहुँची प्रतीत होती है। क्योंकि वहाँ पर गुफाओं की छतों तथा दीवारों पर जो चित्र मिले हैं उच्च स्तर के है तथा उनमें रंगों का भी सुन्दर प्रयोग है। तूलिका के लिए आदि मानव ने किसी रेशेदार लकड़ी या बाँस का प्रयोग किया। उसके छोर को छेतकर तूलिका बनाई और इसी प्रकार अपने भावों तथा दैनिक जीवन को शिलाओं पर लिखकर आज के कला समीक्षकों को एक शोध का विषय प्रदान किया।

देश के अन्य किसी भाग में संस्कृति का इतना लम्बा अविच्छिन्न इतिहास अपने मूल स्थान पर सुरक्षित दशा में प्राप्त नहीं हुआ है और न ही अन्य किसी एक स्थान पर प्रागैतिहासिक मानव के वास्तविक निवास के इतने अधिक स्थल प्राप्त हुये हैं। प्रागैतिहासिक चित्रों से यह सिद्ध होता है कि मानव–मन सदैव अभिव्यक्ति के लिए कलाकृतियाँ बनाया करता था। ये चित्र अनगढ़ दीवारों पर भले ही बने हैं, किन्तु इनमें कलात्मकता के प्रमुख गुण विद्यमान हैं। इतिहास के समय से पहले के ये चित्र मानव–मन की भावनाओं के पहले साकार रूप है।

किसी समय के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्वरूप का लेखा–जोखा इतिहास कहलाता है। भारतवर्ष में लिपि के आविष्कार से पहले ज्ञान को श्रुति–परम्परा में स्थायी रखा जाता था, अर्थात् एक व्यक्ति का ज्ञान दूसरे व्यक्ति द्वारा सुन कर याद कर लिया जाता था। इसी प्रकार एक गुरु अपने शिष्य को अपना ज्ञान दे दिया करता था। भारतवर्ष का इतिहास भी इसी प्रकार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को देकर वर्षों–वर्षों तक आगे आने वाले लोगों के लिए सुरक्षित रखे गये। काल के बीच बहुत लम्बा समय है जिसके बारे में कोई नहीं जानता। धर्म ग्रन्थों में अनेक विवरण दिये गये हैं किन्तु जो सबूत प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार सिन्धु घाटी की सभ्यता के अवशेषों से पूर्व मानव सभ्यता की कोई क्रमबद्ध जानकारी उपलब्ध नहीं है, केवल पत्थरों के हथियारों, हड्डियों के गहनों तथा गुफाओं की दीवारों पर बने हुए चित्र हमें उस प्रारम्भिक मानव के बारे में जानकारी देते हैं।

प्रागैतिहासिक काल का प्रारम्भ पाषाणकाल से माना जाता है। उस समय मनुष्य पूरी तरह जंगली अवस्था में रहता था और दैनिक कार्यों में केवल पत्थरों को उपयोग में लाता था। ये चित्र उसने अपने निवास–स्थल की पथरीली दीवारों पर बनाये। उस मानव द्वारा बनाये गये चित्र प्रागैतिहासिक चित्र कहलाये।

भारतवर्ष में कार्लाइल तथा काकबर्न नामक दो विदेशी विद्वानों ने प्रागैतिहासिक चित्रों की खोज की। इन विद्वानों को 1880 ई0 में मिर्जापुर की पहाड़ियों में घोड़मंगर नामक स्थान पर ये चित्र प्राप्त हुए। इन चित्रों के साथ आस–पास के स्थानों में प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रों का विवरण इन लेखकों ने प्रकाशित किया। शिकार इन चित्रों का प्रमुख विषय था। गैंडे के शिकार तथा अन्य पशुओं के शिकार के दृश्यों के

साथ यहाँ कुछ अन्य पशु भी चित्रित थे। इसके बाद तो अन्य विद्वानों के ध्यान भी इस ओर गया और देश के विभिन्न स्थानों में प्रागैतिहासिक चित्र खोज निकले गये।

प्रागैतिहासिक कालीन चित्र शैल चट्टानों पर बने मिलते हैं और इन चित्रों को देखने पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि प्रागैतिहासिक चित्रकार ने मानवाकृतियों का चित्रण बाद में शुरू किया पहले वह जानवरों का ही चित्रण करता रहा। उसने मानव को भी पशु की खाल ओढ़ कर छदम वेश धारण किए हुए आरम्भिक युग में ही चित्रित करना शुरू कर दिया था आदिम शिला चित्रों में काल क्रम परिमाण एवं कलात्मकता सभी दृष्टियों से मानव चित्रण का स्थान पशु चित्रण के बाद आता है। इस समय के मानव का सम्पूर्ण जीवन पशुओं पर ही आधारित था। वह जानवरों का शिकार कर भोजन प्राप्त करता था और उन्हीं से डरता था। पशु जीवन के निकट सम्पर्क एवं व्यापक अनुभव के कारण ही प्रागैतिहासिक चित्रों में जानवरों को मुख्य रूप से चित्रित किया गया।

जानवरों को शुरू से ठोस बनाता था जबकि मानवाकृतियाँ केवल रेखा के द्वारा और छाया भास मात्र बनायी गयीं। बाद में इन आकृतियों में कुछ परिवर्तन आता गया और जब मानव ने मवेशी पालन और कृषि करना शुरू किया तभी मानवाकृति में भी कुछ परिवर्तन आया और अब मानवाकृतियाँ दो रेखाओं द्वारा तथा आयताकार बनने लगी।

आदिम अवस्था में मानव जंगलों में रहता था और इसी अवस्था में हमें मानव के द्वारा रचित प्रारम्भिक चित्र प्राप्त है यह युग आखेट युग था और आखेटक ही आदिम चित्रकार था तथा आखेटक पशु व आखेट दृश्य ही उसकी कला के प्रिय विषय थे। मनुष्य जब समूह में रहने लगा तब उसके खान–पान तथा चित्र रचना और चित्र विषयों में परिवर्तन हुआ अब फल तोड़ना व मधु संचय के चित्र भी बनने लगे।

प्रागैतिहासिक चट्टानों पर कई स्थानों पर चित्र ऊपर–नीचे परतों में बनाए गये हैं नीचे की परत के चित्र पहले हैं और ऊपर के कुछ बाद के, इनमें मानवीय पशु आकृतियाँ तीलियों के घेरे बनाकर लाल, पीले रंगों में लिखी गयी है तथा इनके ऊपर आकृतियां बनी हैं। आदि मानव ने जिस नई वस्तु को देखा भयवश या आश्चर्यवश उसी को गुफाओं में चित्रित कर दिया वह जिससे डरता था या जो उसके जीवन काल में मुख्य भूमिका निभाते थे उन्हीं को शिलाओं पर चित्रित करता था। आज से हजारों वर्षों पूर्व दीवारों पर सादी रेखाओं द्वारा शक्ति के रूप में मानवाकृति चित्रण हुआ। उन्हें लोक कलाकार आज भी उसी प्रकार बनाता आ रहा है और इसका अनुमान हम दोनों ही समय की मानवाकृतियों देख कर लगा सकते हैं जिनमें केवल एक–दो रेखाओं को छोड़कर बाकी वैसी ही चित्रित है जैसी आदिम कला में थी। प्रागैतिहासिक काल में चित्रित मानवाकृतियों के विभिन्न स्वरूप देखे जा सकते हैं लेकिन प्रारम्भिक चित्र केवल रेखा रूप ही हैं। उस युग में भी वह जानवरों के चित्र न केवल ठोस बनाता था बल्कि उन्हें आड़ी–तिरछी रेखाओं द्वारा अलंकृत भी करता था। कालान्तर में आखेट दृश्यों में पशुओं के साथ मानव–आकृतियों भी अंकित होने लगी।

शिला चित्र के विशेषज्ञों के अनुसार शिलाचित्रों में मानवाकृति के विकास क्रम की दृष्टि से आयताकार देह वाली मानवाकृति आरम्भिक समय की है इस प्रकार के आयताकार मानव रूप एक या एक से अधिक खड़ी वक्र रेखाओं द्वारा बने हैं।

प्रागैतिहासिक चित्रों में मानवाकृति की विविधता इस प्रकार जानी जा सकती हैः–

1. ऐसे चित्र जिनमें देह का अंकन मात्र रेखांकन परन्तु सिर ठोस अंकित किया गया है।
2. कुछ चित्रों में रेखीय देह अंकन के साथ सिर के अतिरिक्त अधोवस्त्र एवं हथियार ठोस अंकित किए गये हैं।
3. तीसरे प्रकार के चित्रों में मानव देह को छायांकन के माध्यम से दर्शाया गया है।
4. कुछ ऐसी आकृतियाँ भी प्राप्त हैं जिनमें छायाँकन की बाहय रेखाओं का अंकन मात्र है और अब नारी और पुरूष आकृतियों के अंकन में अन्तर दिखाई पड़ता है।

चौथी प्रकार की आकृतियों के समकक्ष ही ऐसी आकृतियाँ भी प्राप्त है जिनमें आकृति ज्यामितीय और ठोस रूप ग्रहण करती प्रतीत होती है।

जैसे–जैसे आदिम कलाकार ने अपने जीवन में सुधार किए वैसी ही उनके द्वारा चित्रित चित्रों में मानवाकृतियों में भी परिवर्तन आता गया जब आदिम मानव ने कुछ ज्ञान प्राप्त किया तो इस समय की मानवाकृतियाँ रेखाओं से कुछ और ठोस बनने लगी और अब कलाकार देह तो केवल रेखा के द्वारा ही बनता था लेकिन उसके ठोस सिर के साथ ही वह अधोवस्त्र भी चित्रित करने लगा था और वह अधोवस्त्र को विभिन्न प्रकार के अलंकरणों से सजाता भी था कहीं अधोवस्त्र में ज्यामितीय डिजाइन बनाए गये हैं तो कहीं लहरदार रेखाओं से उन्हें सजाया गया है। इस समय तक मानव ने शिकार आदि के विविध उपकरण ढूँढ निकाले थे और इस प्रकार की आकृतियाँ जिनमें ठोस सिर के साथ अधोवस्त्र चित्रित है अधिकतर शिकार की हैं और उन्हें तीर आदि लिए हुए दिखाया गया है।

पशु चित्रण के समान ही मानवाकृति चित्रण में भी कहीं–कहीं मानवाकृति को आयताकार बनाकर उसमें ज्यामितिय रेखाऐं बनाई गई हैं। कहीं उन्हें सीधी रेखाओं द्वारा भरा गया है तो कहीं कहीं आड़ी रेखाएँ बनायी गई हैं। इस प्रकार ये आकृतियाँ सीढ़ी जैसा आभास देती हैं, इन आकृतियों के सिर हमेशा गोल और ठोस बनाए गये हैं। चित्रों में नारी और पुरुष आकृतियों को भेद भी दिखाई पड़ता है। न्यूमेयर इरविन के अनुसार आयताकार और यष्टिचत दोनों प्रकार की आकृतियां चित्रित हुई हैं। संभवतः

तभी से नारी देह की स्थूलता से प्रेरित कलाकार नारी देह को स्थूलाकार चित्रित कर रहा था जबकि पुरुषाकृतियाँ यष्टिचत अंकित हुई है।

प्रागैतिहासिक मानवाकृतियाँ व्यक्तिवादिता पर आधारित नहीं हैं कलाकार ने किसी व्यक्ति विशेष के चित्र नहीं बनाए हैं उसने तो केवल मानव मात्र को चित्रित किया है जो एक मानव जात है इसी कारण प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में मानवाकृति के सूक्ष्म अंगों जैसे आँख, नाक, कान आदि का प्रदर्शन नहीं किया है वह तो केवल एक छवि मात्र है जिससे मानवाकृति का आभास मिलता है केवल किसी–किसी चित्र में अंगुलियों या चिबुक आदि को दिखाने का प्रयास किया गया है।

प्रागैतिहासिक कालीन समूह नृत्य वाले चित्रों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि पुरुष व नारी दोनों ही समूह नृत्य में भाग लेते थे। नृत्य करते हुए जो पुरूष व नारी आकृति के चित्र बने हैं वे अधिकतर लयात्मक रेखाओं द्वारा ही बनाए गये हैं। लेकिन कहीं–कहीं ज्यामितीय रूप भी दिखाई दे जाते हैं।

शिला चित्रों में मानवाकृतियों का पूर्ण विकास बाद की आकृतियों में दिखाई देता है। इनमें डमरूनुमा आकृतियाँ बनाकर चेहरे में नासिका चिबुक आदि का प्रदर्शन भी किया गया है और हाथ–पैर भी चित्रित किए गये हैं। कभी–कभी अधोवस्त्र अथवा साड़ी का बॉर्डर भी प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में नारी आकृति के कानों में कुण्डल व पैरों में कड़े भी पहनाए गये हैं। ये दोहरी रेखा शैली में और आयताकार मानवाकृतियाँ लोक–शैली में सदृश है। भारतीय शिला चित्र किसी परम्परा में बंधे आगे विकसित नहीं हुआ और न ही उनका विकास क्रम आगे कहीं देखने को मिलता है ये प्रागैतिहासिक चित्र अपने आप में पूर्ण है।

ये शैल चित्रकला की एक विधा मात्र नहीं हैं बल्कि ये मानवता के विकास का एक निश्चित सोपान प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदिम मानव ने न केवल अपने संवेगों को बल्कि रहस्यमय प्रवृत्ति और जंगल के खूंखार प्रवासियों के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए किये गये संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। यहाँ हम देखते हैं कि घातप्रतिघात की उत्तेजना, गति से परिपूर्ण हिरणों का सौन्दर्य, नृत्य की लय और मृत्यु की त्रासदी। ये शैल चित्र इसके साक्षी है कि भारत का ह्दय सभ्यता के अभ्युदय के कहीं बहुत पहले सृजनात्मक चेतना से अनुप्राणित था।

संदर्भ

1. जगदीश गुप्त–प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला
2. बी0एस0 पाणिकर–प्रिहिस्टोरिक केव पेंटिंग
3. चर्तुवेदी, गोपाल मधुकर–भारतीय चित्रकला की संस्कृतिक पृष्ठ भूमि
4. श्याम कुमार पाण्डेय–पेंटेड रोक शैल्टर्स इन मध्य प्रदेश
5. गार्डन, डी0एच0–द प्रिहिस्टोरिक बैक ग्राउण्ड ऑफ इण्डियन कल्वर
6. क्यूमेयर, इरविन–प्रिहिस्टोरिक इंडियन रोक पेंटिंग
7. एच0डी0 संकलिया–द न्यूड इन इंडियन आर्ट
8. शर्मा, लोकेश चन्द्र–भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास
9. आशा आनन्द–भारतीय चित्रकला–प्रागैतिहासिक काल से पहाड़ी शैली तक